بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -20
Issue - 10

राह-ए-ईमान

अक्टूबर
2018 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. हदीस शरीफ़..... 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम).....4
5. सम्पादकीय.....6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः 29-06-2018.....8
7. धर्मों की तुलना.....12
8. क्या मांस खाना एक क्रूर कार्य है?.....18
9. कर्बला.....19
10. सिलसिला अहमदिया (जिल्द-1).....23
11. मिर्क़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन.....25
12. आबिद खान साहिब की डायरी से 28
13. फर्मूदात हज़रत मुस्लेह मौऊदरज़ि॰.....30
14. सामान्य ज्ञान.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
शेख मुजाहिद अहमद

उप सम्पादक
फरहत अहमद आचार्य
मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल महदी लईक M.A.
कम्पोज़िंग टाइप सेटिंग
नादिया परवेज़ा
अमतुल करीम नय्यर:
टाइटल डिज़ाइन
आर महमूद अब्दुल्लाह
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद
अनीस अहमद असलम

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 150 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor SK. Mujahid Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَعَسٰٓى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ‌ ۚ وَعَسٰٓى اَنۡ تُحِبُّوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمۡ‌ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ (अलबक़-)

(र: - 46-47

अर्थात- और संभव है कि तुम एक बात को पसंद न करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और संभव है कि तुम एक बात को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो।और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते।

हदीस शरीफ़

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला पर निगाह रख, तू उसे अपने सामने पाएगा। तू अल्लाह तआला को खुशहाली में पहचान, अल्लाह तुझे तंगी में पहचानेगा और समझ ले कि जो तुझ से चूक गया और तुझ तक नहीं पहुँच सका वह तेरे भाग्य में नहीं था और जो तुझ को मिल गया वह तुझे मिले बिना नहीं रह सकता था क्योंकि भाग्य का लिखा ऐसा ही था।जान लो कि (अल्लाह तआला की) सहायता सब्र करने के साथ है और ख़ुशी बेचैनी के साथ संलग्न है, और प्रत्येक कठिनाई के पश्चात सरलता और आसानी के दिन आते हैं।

(तिरमिज़ी अबवाब सिफतिल क़यामत)

☆ ☆ ☆

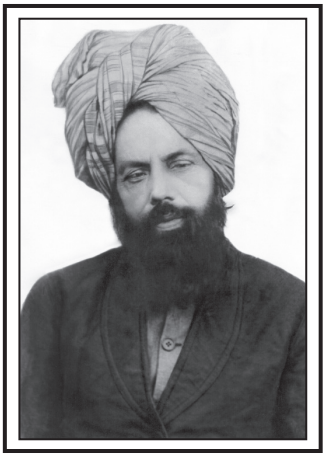

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

ख़ुदा तआला को आज़माना नहीं चाहिए

एक व्यक्ति ने कहा मेरे बाप की दुकान ख़राब हालत में हो गई है अगर वह ठीक हो जाए तो मैं मिर्ज़ा साहिब को मान लूंगा।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- ख़ुदा तआला को इन बातों के साथ आज़माना नहीं चाहिए। मैं आश्चर्य करता हूं लोगों की हालत पर जो इस प्रकार के सवाल करते हैं। ख़ुदा तआला को किसी की क्या परवाह है। क्या यह लोग ख़ुदा तआला पर अपने ईमान लाने का एहसान करते हैं। जो व्यक्ति सच्चाई पर ईमान लाता है वह खुद गुनाहों से पाक होने का एक माध्यम तलाश करने वाला है वरना ख़ुदा तआला को उसकी क्या आवश्यकता है? ख़ुदा तआला फरमाता है अगर तुम सब के सब मुर्तद हो जाओ तो वह एक और नई क़ौम पैदा करेगा जो उससे प्यार करेगी। जो व्यक्ति गुनाह करता है और काफ़िर बनता है वह ख़ुदा तआला का कुछ नुकसान नहीं करता और जो ईमान लाता है वह ख़ुदा तआला का कुछ बढ़ा नहीं देता। हर एक व्यक्ति अपना ही फायदा या नुकसान करता है। जो लोग अल्लाह तआला पर एहसान रखकर और शर्तें लगाकर ईमान लाना चाहते हैं उनकी वह हालत है कि एक व्यक्ति जो बहुत प्यासा हो पानी के चश्मे पर जाता है परंतु वह खड़ा होकर कहता है कि हे चश्मे! तेरा पानी तब पिऊंगा जब कि तू मुझे 1000 रुपये निकाल कर दे। बताओ उसको चश्मे से क्या उत्तर मिलेगा? यही कि जा प्यास से मर, मुझे तेरी आवश्यकता नहीं। ख़ुदा तआला गनी है बेनियाज़ है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 7-8)

गिले-शिकवे करना अच्छा नहीं है

एक दिन एक औरत ने किसी दूसरी औरत का शिकवा किया आपने फरमाया के देखो यह बहुत बुरी आदत है जो विशेषकर औरतों में पाई जाती है, चूंकि मर्द और काम बहुत रखते हैं इसलिए उनको बहुत कम ही ऐसा अवसर मिलता है कि बेफिक्री से बैठकर आपस में बातें करें और अगर ऐसा अवसर भी मिले तो उनको और बहुत सी बातें ऐसी मिल जाती हैं जो वह बैठकर करते हैं लेकिन औरतों को न ज्ञान होता है और न कोई ऐसा काम होता है, इसलिए सारे दिन का काम सिवाय गिला और शिक्वा के कुछ नहीं होता। एक व्यक्ति था उसने किसी दूसरे को गुनहगार देखकर ख़ूब उसकी नुक्ता चीनी की और कहा कि तू नर्क में जाएगा। क़यामत के दिन ख़ुदा तआला उससे पूछेगा कि क्यों तुझको मेरे अधिकार किसने दिए हैं? नर्क और स्वर्ग में भेजने वाला तो मैं ही हूं तू कौन है। अच्छा जा मैंने तुझको नर्क में डाला और यह गुनहगार बंदा जिसका तू गिला-शिकवा किया करता था और कहा करता था कि यह ऐसा है वैसा है और नर्क में जाएगा उसको मैंने जन्नत में भेज दिया है। अत: हर एक इंसान को समझना चाहिए कि ऐसा न हो कि मैं ही उल्टा शिकार हो जाऊं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 10-11)

रूहानी ख़ज़ायन
'शिक्षा' (पुस्तक 'कश्ती नूह' से उद्धृत)
(अहमदियत की शिक्षाओं का सारांश)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी फरमाते हैं :-

....इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुँहफट पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को धरती से नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा। वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अदभुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है परन्तु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता हैं, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है। वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का दामन न छोड़े। हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना। समस्त संसार का वही ख़ुदा है जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए अलौकिक निशान प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए मसीह मौऊद बनाकर भेजा। धरती और आकाश में उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। जो मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता और उस पर आस्था नहीं रखता वह सौभाग्य से वंचित और ज़िल्लत से ग्रसित है। हमने ख़ुदा की वाणी को सूर्य की भांति प्रकाशमान पाया। हमने उसे देखा कि संसार का वही ख़ुदा है उसके अतिरिक्त कोई नहीं। जिसे हमने पाया वह समस्त शक्तियों से परिपूर्ण, जीवित रहने वाला और जीवनदाता है। जिसे हमने देखा वह असीम और अनन्त शक्तियों वाला है। सत्य तो यह है कि उसके समक्ष कोई बात भी अनहोनी नहीं सिवाए इसके कि जो उसकी पुस्तक और उसके वादे के विरुद्ध हो। अत: जब तुम ख़ुदा से प्रार्थना करो तो उन मूर्ख भौतिक वादियों की भांति न करो जो अपने ही विचार से प्रकृति का एक विधान बना बैठे हैं, जिस की ख़ुदा की पुस्तक द्वारा कोई पुष्टि नहीं क्योंकि वे ख़ुदा से बहुत दूर हैं, उनकी प्रार्थनाएं कदापि स्वीकार न होंगी। वे अंधे हैं न कि सुझाखे, वे मुर्दे हैं न कि जीवित।

ख़ुदा के समक्ष अपना बनाया हुआ विधान प्रस्तुत करते हैं। और उसकी असीम और अनन्त शक्तियों को सीमित करते हैं, उसे निर्बल समझते हैं। अत: उनसे उनकी विचारधारा के अनुसार ही व्यवहार किया जाएगा। परन्तु हे मनुष्य जब तू प्रार्थना हेतु खड़ा हो तो तुझ पर अनिवार्य है

कि तू यह विश्वास रखे कि तेरा ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार और शक्ति रखता है तब तेरी प्रार्थना स्वीकार होगी और तू ख़ुदा की अलौकिक शक्तियों के चमत्कार को देखेगा, जो हमने देखे हैं। इस सन्दर्भ में हमारी साक्ष्य ख़ुदा के प्रत्यक्ष दर्शन करने पर आधारित है न कि कपोल कल्पित गाथाओं पर। उस मनुष्य की प्रार्थना कैसे स्वीकार हो सकती है जो बड़ी-बड़ी विपत्तियों को प्रकृति के नियम के विरुद्ध समझता है। ऐसा मनुष्य ख़ुदा के समक्ष प्रार्थना हेतु खड़े होने का साहस कैसे कर सकता है जो ख़ुदा को प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार रखने वाला एवं सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं समझता। पर हे सौभाग्यशाली मनुष्य! तू ऐसा मत कर, तेरा ख़ुदा तो वह है जिसने अगणित नक्षत्रों को आकाश में बिना किसी स्तम्भ के लटका दिया, जिसने धरती और आकाश को कुछ न होते हुए उत्पन्न किया। क्या तू ऐसा विचार रखता है कि वह तेरे कार्य करने में असमर्थ रहेगा★ तेरे ही विचार तुझे वंचित कर सकते हैं। हमारा ख़ुदा तो आग्णय चमत्कारों वाला है, पर वे ही देख पाते हैं जो पूर्ण सच्चाई और आस्था से उसी के हो गए हैं। वह ऐसे मनुष्यों पर अपने अलौकिक चमत्कार प्रदर्शित नहीं करता जो उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं करते और उसके सच्चे परम भक्त नहीं। कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अंत तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमार ख़ुदा है क्योंकि हमने इसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह धन लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवन दायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, कि ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि लोगों के कान खुलें। (शेष.....)

☆ ☆ ☆

★**हाशिया :-**ख़ुदा कोई भी कार्य करने में असमर्थ नहीं। हां ख़ुदा की पुस्तक ने दुआ (प्रार्थना) के लिए यह नियम प्रस्तुत किया कि वह सज्जन पुरुष के साथ अपनी असीम कृपा से मित्रों की भांति व्यवहार करता है, अर्थात् कभी तो अपनी इच्छा को छोड़कर उसकी प्रार्थना सुनता है जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है- उदुऊनी अस्तजिब लकुम (अलमोमिन) और कभी-कभी अपनी इच्छा ही पूर्ण कराना चाहता है जैसा कि फ़रमाया-"व लनब्लोवन्नाकुम बिशयइन मिनल खौफ़े वल्जुए" ऐसा इसलिए करता है कि कभी मनुष्य से उसकी प्रार्थना अनुसार व्यवहार करके विश्वास और ख़ुदा प्राप्ति के ज्ञान के ज्ञान में उसको उन्नत करे और कभी अपनी इच्छानुसार व्यवहार करके अपनी प्रसन्नता का पुरस्कार प्रदान करे, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाए और उससे प्यार करते हुए सदमार्ग पर अग्रसर करे।

सम्पादकीय

याद रखो कि यह जमाअत इस बात के लिए नहीं कि दौलत और दुनियादारी में तरक्की करें और ज़िन्दगी आराम से गुज़रे..

प्यारे अहमदी भाइयो! यह शब्द हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए वर्णन किए हैं कि इस जमाअत को बनाने का वास्तविक उद्देश्य यह है कि अपने दिलों को पाक किया जाए , आप फरमाते हैं:-

अल्लाह तआला की यह इच्छा नहीं कि मसीह की वफात को सिद्ध करने वाली एक जमाअत पैदा हो जाए यह बात तो इन मौलवियों की मुखालिफत की वजह से बीच में आ गई है। असल उद्देश्य अल्लाह तआला का तो यह है कि एक पाक दिल जमाअत सहाबा के समरूप बन जाए

"वफ़ाते मसीह का मामला तो यों ही बीच में आ गया है। मौलवी लोगों ने अकारण अपनी टांग बीच में डाली है। इन लोगों को उचित न था कि इस मामले में दिलेरी दिखाते। ख़ुदा के कथन, नबी के दीदार और सहाबा के इज्मा (सर्वसम्मति) ये तीन बातें इसके लिए पर्याप्त थीं। हमें तो अफसोस होता है कि इसका वर्णन हमें अकारण करना पड़ता है लेकिन हमारा वास्तविक मामला अभी दूसरा है यह तो केवल अनावश्यक बातों को बीच में से उठाया गया है। सोचो कि जो व्यक्ति दुनियादारी में डूबा हुआ है और धर्म की परवाह नहीं करता अगर तुम लोग बैअत करने के बाद वैसे ही रहो तो फिर तो तुम में और उसमें क्या फर्क है? कुछ लोग ऐसे कच्चे और कमज़ोर होते हैं कि उनकी बैअत का उद्देश्य भी दुनिया ही होती है। अगर बैअत के बाद उनकी दुनियादारी के मामलात में कुछ भी फर्क आ जाए तो फिर पीछे कदम रखते हैं।

याद रखो कि यह जमाअत इस बात के लिए नहीं कि दौलत और दुनियादारी में तरक्की करें और ज़िन्दगी आराम से गुज़रे। ऐसे व्यक्ति से तो ख़ुदा तआला बेपरवाह है चाहिए कि सहाबा की ज़िन्दगी को देखो, वे ज़िन्दगी से प्यार न करते थे, हर वक्त मरने के लिए तैयार रहते थे, बैअत के अर्थ ही अपनी जान को बेच देना है। जब इंसान ज़िन्दगी को वक़्फ़ कर चुका तो फिर दुनिया के ज़िक्र को बीच में क्यों लाता है? ऐसा आदमी तो केवल रस्मी बैअत करता है वह तो कल भी गया और आज भी गया। यहां तो सिर्फ ऐसा व्यक्ति रह सकता है जो ईमान को दुरुस्त करना चाहे। इंसान को चाहिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा की ज़िन्दगी का प्रतिदिन अध्ययन करता रहे। वह तो ऐसे थे कि कुछ तो मर चुके थे और कुछ मरने के लिए तैयार बैठे थे। मैं सच-सच कहता हूं कि इसके सिवाय बात नहीं बन सकती अल्लाह तआला फरमाता है कि जो लोग किनारे पर खड़े होकर इबादत करते हैं ताकि मुश्किल देख कर भाग जाएं

वे फायदा नहीं हासिल कर सकते।

दुनिया के लोगों की आदत है कि कोई छोटी सी तकलीफ हो तो लंबी चौड़ी दुआएं मांगने लगते हैं और आराम के समय ख़ुदा तआला को भूल जाते हैं। क्या लोग चाहते हैं कि इम्तिहान में से गुज़रने के बिना ही ख़ुदा खुश हो जाए। ख़ुदा तआला रहीम और करीम है मगर सच्चा मोमिन वह है जो दुनिया को अपने हाथ से ज़िबह कर दे। ख़ुदा तआला ऐसे लोगों को व्यर्थ नहीं करता। आरंभ में मोमिन के लिए दुनिया जहन्नुम के समान हो जाती है, विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां उसके सामने आती हैं और भयानक सूरतें प्रकट होती हैं तब वह सब्र करते हैं और ख़ुदा तआला उनकी सुरक्षा करता है। लेकिन-

इश्क़ अव्वल सरकश व खूनी बूद
ता गुरेज़ दहर कि बैरूनी बूद

जो ख़ुदा तआला से डरता है उसके लिए दो जन्नत होती हैं। ख़ुदा की रज़ा (इच्छा) के साथ जो सहमत हो जाता है ख़ुदा तआला उसको सुरक्षित रखता है और उसको पवित्र जीवन प्रदान किया जाता है, उसकी सब मुरादें पूरी की जाती हैं। परंतु यह बात ईमान के बाद हासिल होती है।

एक व्यक्ति के अपने दिल में हज़ार गंदगी होती है फिर ख़ुदा पर शक करता है और चाहता है कि मोमिनों का हिस्सा मुझे भी मिले। जब तक इंसान पहली ज़िन्दगी को ज़िबह न कर दे और महसूस न कर ले कि नफ़्स अम्मारा की इच्छा मर गई है और ख़ुदा तआला की महानता दिल में बैठ न जाए तब तक मोमिन नहीं होता। अगर मोमिन को खास विशेषता प्रदान न की जाए तो मोमिनों के वास्ते जो वादे हैं वह क्योंकर पूरे होंगे। लेकिन जब तक दोगलापन और मुनाफिक़त हो तब तक इंसान कोई फायदा हासिल नहीं कर सकता।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝

(अन्निसा - 146) अल्लाह तआला का वादा है कि एक ऐसी जमाअत बनाएगा जो हर प्रकार से सब पर प्रधानता रखेगी। अल्लाह तआला हर प्रकार से फज़ल करेगा मगर ज़रूरत इस बात की है कि हर व्यक्ति अपने आप को पवित्र करे। हाँ कमज़ोरी में अल्लाह तआला क्षमा करता है जो व्यक्ति कमज़ोर है और हाथ उठता है कि कोई उसे पकड़े और उठाए उसको उठाया जाएगा मगर मोमिन को चाहिए कि अपनी हालत पर फारिग़ न बैठे उससे ख़ुदा राज़ी नहीं है। हर प्रकार से कोशिश करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला के राज़ी करने के जो सामान हैं वह सब उपस्थित किए जाएं।

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 503-505)

★ ★ ★

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 29.06.2018 मस्जिद बैतुल फतूह, लंदन

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुंज़िर के जीवन चरित्र से सम्बंधित ईमान वर्धक वृत्तांत का सुन्दर वर्णन

MTA प्रशिक्षण का एक अच्छा साधन है तथा हर प्रकार के फितने और फसाद से बचाने वाला भी है

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मैं हज़रत अम्मार रज़ीयल्लाहु अन्हु के विषय में बयान कर रहा था उनके विषय में कुछ बातें और थीं, वे भी आज मैं बयान करूँगा। हज़रत हसन रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत अमरू बिन आस ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस व्यक्ति से अपने निधन के दिन तक प्रेम करते रहे हों मैं आशा करता हूँ कि ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह तआला उसे नर्क में डाल देगा। हज़रत अमरू बिन आस ने कहा कि अम्मार बिन यासिर वह व्यक्ति थे जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सदैव प्यार किया। कहते हैं कि मैं दो व्यक्तियों के विषय में साक्षी हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने निधन तक उनसे मुहब्बत करते थे, वे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद तथा हज़रत अम्मार बिन यासिर थे।

हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा ने हज़रत अम्मार के विषय में फ़रमाया कि वे एड़ियों से लेकर अपने सिर की चोटी तक ईमान से भरे हुए थे। हज़रत खब्बाब हज़रत उमर की सेवा में उपस्थित हुए और हज़रत उमर ने कहा कि निकट आ जाओ, इस मज्लिस का आपसे अधिक कोई अधिकारी नहीं है केवल अम्मार के अतिरिक्त। फिर हज़रत खब्बाब हज़रत उमर को अपनी कमर के घाव के निशान दिखाने लगे जो उन्हें मुशरिकों ने दिए थे। हज़रत उमर उनका सम्मान कर रहे थे क्यूँकि उन्होंने आरम्भिक ज़माने में बड़ी कठिनाईयाँ उठाईं और साथ ही हज़रत अम्मार के बारे में बताया कि उन्होंने भी बड़े दु:ख झेले।

अबू मज्लिस कहते हैं कि एक बार हज़रत अम्मार बिन यासिर ने संक्षिप्त नमाज़ पढ़ी, उनसे किसी ने इसका कारण पूछा तो हज़रत अम्मार ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ से तनिक भी अन्तर नहीं किया। यह रिवायत इस प्रकार भी मिलती है कि एक बार हज़रत अम्मार बिन यासिर ने हमें बड़ी संक्षिप्त नमाज़ पढ़ाई, लोगों को इस पर आश्चर्य हुआ। हज़रत अम्मार ने कहा कि मैंने रुकूअ और सजदा पूरा नहीं किया? उन्होंने कहा कि क्यूँ नहीं। हज़रत अम्मार ने कहा कि मैंने इसमें एक दुआ की है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मांगा करते थे और वह दुआ यह है कि हे अल्लाह, परोक्ष का ज्ञान तुझे ही है तथा सारे प्राणियों पर तेरा ही आधिपत्य है, तू मुझे उस समय तक जीवित रख जब तेरी जानकारी में मेरा जीवन मेरे लिए उपयोगी है तथा मुझे उस समय मौत दे जब मौत मेरे लिए उचित हो। हे अल्लाह, मैं परोक्ष एवं वर्तमान में तुझ से तेरे भय को चाहता हूँ तथा प्रकोप एवं प्रसन्नता की अवस्था में सत्य बात कहने की शक्ति मांगता हूँ और तंगी एवं समृद्धि में बीच का मार्ग धारण करने तथा तेरे चेहरे पर पड़ने वाले आनन्द की दृष्टि तथा तेरी निकटता का शौक तुझसे मांगता हूँ और मैं किसी कठिनाई युक्त बात तथा पथभ्रष्ट करने वाले मार्ग से तेरी शरण में आता हूँ। हे अल्लाह, हमें ईमान के सौन्द्रय से सुसज्जित कर दे और हमें हिदायत पाने वाले लोगों के लिए मार्ग दर्शक बना दे।

अबू नौफिल बिन अबी अकरब कहते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर सबसे अधिक चुप रहने वाले तथा सबसे कम बात करने वाले थे, वे कहा करते थे कि मैं फितने से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ, मैं फितने से अल्लाह की शरण चाहता हूँ।

मुहम्मद बिन अली बिन हनीफा बयान करते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्मार से फ़रमाया- क्या मैं तुम्हें वह दम सिखाऊँ जो जिब्राईल ने मुझ पर किया है। हज़रत अम्मार कहते हैं कि मैंने कहा, जी या रसूलुल्लाह। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको यह दम सिखाया कि-

بسم الله ارقيك و الله يشفيك من كل داء يؤذيك

अर्थात- मैं अल्लाह के नाम से शुरु करके तुम्हें दम करता हूँ तथा अल्लाह तुम्हें प्रत्येक उस बीमारी से मुक्ति प्रदान करे। तुम इसे पकड़ लो और खुश हो जाओ।

हज़रत अनस बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- जन्नत, हज़रत अली और हज़रत अम्मार और हज़रत सलमान और हज़रत बिलाल रज़ीयल्लाहु अन्हुम की इच्छुक है। हज़रत हुज़ैफ: रज़ीयल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़रमाया कि मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हारे बीच कितने समय तक रहूँगा। अत: तुम मेरे बाद इन लोगों का अनुसरण करना, आपने

अबू बकर और उमर की ओर संकेत फ़रमाया और फ़रमाया अम्मार के मार्ग को अपनाना और जो तुम्हें इब्ने मसऊद बयान करें उनकी पुष्टि करना।

हज़रत उसमान के विरुद्ध तथा खिलाफत के विरोध में जो उपद्रव हुआ वह इस कारण से उत्पन्न हुआ कि उन लोगों की तर्बियत उचित प्रकार से नहीं हुई थी तथा वे कभी कभी मर्कज़ (केन्द्र) की ओर आया करते थे, क़ुर्आन करीम का ज्ञान बहुत थोड़ा था इसलिए आपने जमाअत को उस समय निर्देश दिया कि इस चीज़ से तुम लोगों को सीखना चाहिए तथा उपदेश से लाभान्वित होना चाहिए, इस लिए क़ुर्आन के ज्ञान को सीखो, मर्कज़ से सदैव सम्पर्क रखो तथा दीन का ज्ञान प्राप्त करो ताकि यदि जमाअत में कोई उपद्रव होता है तो उससे बच सको।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने इस ज़माने में MTA का एक ऐसा साधन प्रदान कर दिया है जिसके माध्यम से यदि हम चाहें तो दीन का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। क़ुर्आन करीम के पाठ उसमें होते हैं, हदीस के पाठ होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों के दर्स होते हैं, खुत्बे हैं, खिलाफत से सम्बंध स्थापित होता है, अन्य सम्बोधन हैं, जलसे हैं तो कम से कम इस दृष्टि से यदि हम अपने आपको भी तथा अपनी नस्लों को भी इस माध्यम के साथ जोड़ लें तो प्रशिक्षण का अच्छा साधन है तथा हर प्रकार के फितने और फसाद से बचाने वाला भी तथा दीन का ज्ञान बढ़ाने वाला भी है इस लिए इसकी ओर जमाअत के लोगों को बड़ा ध्यान देना चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो MTA का वरदान दिया है उसके संग अपने आपको जोड़ें।

बद्र के संग्राम के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत अली और हज़रत अबू लुबाबा तीनों बारी-बारी ऊँट पर सवार होते थे। हज़रत अली और हज़रत अबू लुबाबा ने अनुरोध किया कि हम पैदल चलते हैं और हुज़ूर सवार रहें किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न माना तथा मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि तुम दोनों चलने में मुझसे अधिक शक्ति शाली नहीं और न ही मैं तुम दोनों की अपेक्षा प्रतिफल प्राप्त करने के बारे में बेनियाज़ हूँ।

हज़रत अबू लुबाबा की सज्जनता तथा रसूल के लिए निष्ठा की घटना इस प्रकार बयान हुई है कि 5 हिजरी में जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाईयों वाली लड़ाई से निपट कर वापस शहर में तशरीफ लाए तो आपको ख़ुदा तआला की ओर से कश्फी रंग में यह -बताया गया कि जब तक बनू करैज़ा के विद्रोह का निर्णय नहीं हो जाता आपको हथियार नहीं उतारने चाहिएँ। आपने सहाबा में घोषणा करा दी कि सब लोग बनू क़ुरैज़ा के दुर्ग की ओर प्रस्थान करें तथा असर की नमाज़ वहीं पहुंच कर अदा की जाएगी। शुरु शुरु में यहूदी लोग बड़ा घमंड प्रदर्शित करते रहे किन्तु जैसे जैसे समय बीतता गया उनको घेराओ की सख्ती और अपनी दुर्बलता का आभास होना शुरु हुआ अन्तत: उन्होंने आपस में विचार विमर्श किया कि अब क्या करना चाहिए। उन्होंने यह चाल चली कि किसी ऐसे मुसलमान को जो इनसे सम्बंध रखता हो तथा अपनी सादगी के कारण उनके दाव में आ सकता

हो, अपने दुर्ग में बुलाएँ और उससे यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करें कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उनके विषय में क्या निर्णय है। अत: उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में एक बात चीत करने वाला भेजकर यह प्रार्थना की, कि अबू लुबाबा बिन मुन्ज़िर अन्सारी को उनके किले में भिजवाया जाए ताकि वे उससे विचार विमर्श कर सकें। आपने अबू लुबाबा को अनुमति दी और वे उनके किले में चले गए। अब बनू क़ुरैज़ा के प्रमुख लोगों ने यह योजना बनाई हुई थी कि जैसी ही अबू लुबाबा दुर्ग के अन्दर प्रवेश हों, सब यहूदी महिलाएँ और बच्चे रोते चिल्लाते उनके पास एकत्र हो जाएँ तथा अपनी कठिनाई और परेशानी का उनके दिल पर पूरा-पूरा प्रभाव डालने का प्रयास किया जाए। अत: अबू लुबाबा पर यह दाव चल गया तथा बनू कुरैज़ा के सवाल पर कि हे अबू लुबाबा, तू हमारा क्या हाल देख रहा है, क्या हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की योजना के अनुसार अपने दुर्ग से उतर आएँ। अबू लुबाबा ने तुरन्त उत्तर दिया- हाँ उतर आओ परन्तु साथ ही अपने गले पर हाथ फेर कर इशारा किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारी हत्या का आदेश देंगे। हज़रत अबू लुबाबा कहते हैं कि जब यह विचार आया कि मैंने ख़ुदा और उसके रसूल की अवहेलना की है तो मेरे पाँव लड़खड़ाने लगे। आप वहाँ से मस्जिद नबवी में आए तथा मस्जिद के एक खम्बे से अपने आपको बाँध दिया कि मेरा दंड है यह, और कहा कि जब तक ख़ुदा तआला मेरी तौबा कबूल नहीं करेगा इसी प्रकार बंधा रहूँगा। हज़रत अबू लुबाबा कहते हैं कि मैं पन्द्रह दिन इसी परीक्षा में रहा। हज़रत उम्मे सलाम बयान करती हैं कि अबू लुबाबा की तौबा की स्वीकृति की सूचना मेरे घर में अवतरित हुई। मैंने प्रात: काल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हंसते देखा। मैंने निवेदन किया- अल्लाह आपको सदैव मुस्कुराता रखे, आप किस बात पर हंस रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू लुबाबा की तौबा कबूल हो गई। मैंने निवेदन किया- हे अल्लाह के रसूल, मैं उनको सूचित कर दूँ। आपने फ़रमाया कि यदि तुम चाहती हो तो कर दो। हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं कि मैंने निवास स्थान के द्वार पर खड़े होकर कहा कि हे अबू लुबाबा प्रसन्न हो जाओ, अल्लाह ने आप पर कृपा करते हुए आपकी तौबा कबूल कर ली है। लोग दौड़ कर हज़रत अबू लुबाबा को खोलने लगे किन्तु उन्होंने कहा कि नहीं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही मुझे खोलेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फज्र की नमाज़ पढने के लिए तशरीफ ले गए तो अपने पवित्र हाथों से उनको खोला। हज़रत अबू लुबाबा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मैं अपने पैत्रिक घर को जहाँ मुझसे यह पाप हुआ है, छोड़ता हूँ और मैं अपने माल को अल्लाह और उसके रसूल के लिए दान करता हूँ। आपने फ़रमाया कि केवल एक तिहाई माल को दान कर दो। हज़रत अबू लुबाबा ने एक तिहाई माल दान कर दिया तथा अपना पैत्रिक घर छोड़ दिया।

☆ ☆ ☆

धर्मों की तुलना

भाषण - सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि]

(भाग - 03) अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

ख़ुदा तआला ने सूरः अहज़ाब में मुसलमानों की हालत का चित्र यह खींचा है कि ज़मीन बावजूद व्यापक होने के उनके लिए संकुचित हो गई थी और दुनिया ने निर्णय कर लिया था कि मुसलमान अब पिस जाएंगे। उस समय ख़ुदा उनको ख़ुशख़बरी देता है कि तुम विरोधियों को पीस दोगे और दुनिया की हुकूमत तुम्हारी ही होगी। अतः हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि अल्लाह अन्हु के बाबरकत दौर में शाम (अर्थात सीरिया) विजय हुआ। यह उन्नति और यह शान और निम्न अवस्था से बुलंदी पर कदम पहुंचना प्रमाण है इस बात का कि इस्लाम सच्चा है क्योंकि ख़ुदा ने बताया था कि ऐसा होगा और ऐसा ही हुआ और बड़े से बड़े दुश्मन को इक़रार करना पड़ा कि हाँ इस्लाम ने उन्नति की और उसकी उन्नति की उस समय भविष्यवाणी की गई थी जबकि मुसलमानों को अपने घर में भी कोई आराम से नहीं बैठने देता था मगर फिर हुकूमत आई और गरीबों और फ़कीरों को ख़ुदा तआला ने हुकूमतें दीं।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि अल्लाह अन्हु का वृतांत

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि अल्लाह अन्हु का वृतांत है कि जब एक इलाके के गवर्नर बनाए गए और उनके पास किस्त्रा का एक रुमाल था जब खांसी आई तो उन्होंने उस रुमाल से मुंह साफ किया और कहा 'बखे-बखे अबू हुरैरः'★ इसके मायने हैं वाह-वाह अबू हुरैरः आज तू किस्त्रा के रुमाल में थूकता है मगर एक समय तो तेरी यह हालत थी कि तुझे कई-कई दिन भूखे रहना पड़ता था और तू हज़रत अबू बकर[रज़ि] के पास जाता था कि वह बड़े दान करने वाले थे और उनसे सदक़ा की आयत के अर्थ पूछता था और वह बताते थे, हालांकि अर्थ तुझको भी आते थे। फिर हज़रत उमर[रज़ि] के पास जाता और वह भी कुछ न खिलाते। अंततः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आता और आप मुख से ही पहचान जाते और पूछते अबू हुरैरः भूख लगी है और फिर आप दूध का प्याला मंगवाते और मुझसे पहले और लोगों को पीने को देते और मैं सोचता कि ज्यादा अधिकारी मैं था। अंततः मुझको मिलता और मेरा पेट भर जाता। (बुखारी किताबुर्रिक़ाक बाब कैफा कान ऐशुन्नबी) और इसी प्रकार कई-कई दिन भूखे बीत जाते और लोग मुझे मिर्गी का बीमार समझ कर मारते। लेकिन आज यह हाल है कि गर्दन उड़ा देने वाले बादशाहों के विशेष दरबारी रुमाल में तू थूकता है। यह

★ तिरमिज़ी अब्वाबुज़्ज़ुहद बाब मा जाअ फी मईशः अस्हाबुन्नबी

सफलता, यह बुलंदी, यह उन्नति कोई मामूली नहीं है।

फ्रांस का एक लेखक लिखता है कि मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूँ जब मैं यह सोचता हूँ कि ख़जूर के एक निम्न कोटि के छप्पर के नीचे कुछ आदमी बैठे हैं जिनके शरीर पर पूरा कपड़ा नहीं और पेट भी भरा हुआ नहीं, वे बातें करते हैं और कि क़ैसर और किस्रा की हुकूमतों को जीत लेंगे और वह करके भी दिखा देते हैं। अत: यह प्रमाण है इस बात का कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो धर्म लाए वह सच्चा है क्योंकि उसके लिए जो निशान रखा गया था वह पूरा हो गया।

विरोधियों का इस दलील पर एक ऐतराज़

यह इस्लाम की सच्चाई का प्रमाण है परंतु यदि शत्रु आज उसको झुठला दे और कह दे कि यह मुसलमानों ने बाद में क़ुरआन करीम में आयतें मिला दी हैं जैसा कि विरोधियों ने कहा भी है इसलिए यह इस्लाम की सच्चाई की दलील नहीं है क्योंकि अगर यह दलील है तो फिर क्या कारण है कि आज जबकि मुसलमानों की इतनी संख्या है, वे दिन प्रति दिन पराजित हो रहे हैं। इसका क्या उत्तर दिया जाएगा। विरोधी कह सकता है कि हम मानते हैं कि मुसलमानों को उन्नति मिली और यह भी मानते हैं कि इस्लाम ने यूरोप में इंग्लैंड की सीमाओं तक अपना प्रभाव पहुंचाया। अत: कुछ लक्षण मिले हैं जिनसे पता लगता है कि इंग्लैंड की सीमाओं तक इस्लाम पहुंच गया था और उधर चीन तक उसका प्रभाव था। सो जितनी दुनिया उस समय सभ्य कहला सकती थी और मालूम थी उस तमाम पर इस्लाम का प्रभाव था। मगर यह इस्लाम की उन्नति, इस्लाम की सच्चाई की दलील नहीं हो सकती क्योंकि मुसलमानों ने जब उन्नति प्राप्त कर ली तब उसको भविष्यवाणी बना लिया। अन्यथा क्या कारण है कि अब मुसलमान उस समय से बहुत अधिक होते हुए निरंतर और अधिक अपमानित होते चले जा रहे हैं। आप सज्जन विचार करें इसका हम क्या उत्तर दे सकते हैं।

देखो एक समय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनगणना कराई तो मुसलमानों की संख्या 700 मालूम हुई। उस समय मुसलमानों ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! क्या आप यह समझते हैं कि हम तबाह हो जाएंगे और दुनिया हमें पांव तले रौंद देगी, हालांकि अब तो हम सात सौ हैं। या तो यह हाल था या अब यह हाल है कि मुसलमानों की संख्या करोड़ों है परंतु वे हर ओर पराजय पर पराजय और अपमान पर अपमान उठा रहे हैं और उनके दिल इस प्रकार कांप रहे हैं जिस प्रकार पत्ता हवा में उड़ता है।

इस ऐतराज़ का उत्तर

विरोधियों के इस ऐतराज़ के दो उत्तर हो सकते हैं या तो उनके ऐतराज़ को सत्य मान लिया जाए और कह दिया जाए कि नऊज़ुबिल्ला यह क़ुरआन का दावा झूठा है और यह मुसलमानों ने

वास्तव में बाद में मिला लिया। या मुसलमानों को यह निर्णय करना चाहिए कि मुसलमान झूठे हैं। मानो या तो मुसलमान ख़ुदा तआला को नऊज़ुबिल्ला झूठा बनाएं या स्वयं झूठे बनें। इन दो अवस्थाओं में से तीसरी कोई अवस्था नहीं। परंतु हम ख़ुदा तआला को झूठा बनाने की बजाय मान लेंगे कि मुसलमान ही मुसलमान नहीं रहे। अगर मुसलमानों की हालत ठीक होती तो वे बुलंद किए जाते और सम्मान के स्थान उनको प्राप्त होते। परन्तु अब मुसलमानों को जिस अवस्था में देखते हैं दुनिया से न्यूनतर देखते हैं। दौलत और ज़मींदारी उनके पास नहीं, मेल मिलाप और एकता उनके पास नहीं, प्रबंध उन में नहीं, अध्ययन और अध्यापन उनमें नहीं, सांसारिक शिक्षा के लिए जितने अच्छे कॉलेज हिंदुस्तान में हैं वे सब हिंदुओं और सिखों के हैं और मुसलमानों के कॉलेज अत्यंत बुरी अवस्था में हैं। अन्य विषयों में भी उनकी हालत बहुत ख़राब है, फिर यह क्या कारण है। क्या इस्लाम ख़ुदा का सच्चा धर्म नहीं या क्या ख़ुदा बदल गया और पहले ख़ुदा की बजाए कोई और ख़ुदा आ गया या उसकी शक्ति में कमी आ गई है, नऊज़ुबिल्ला या वह अपने वादे भूल गया। वास्तविकता यह है कि इस्लाम भी सच्चा है, ख़ुदा भी वही है, उसके वादे भी सच्चे हैं, उसकी शक्ति में भी कोई कमी नहीं आई, वह अपने वादों को भी नहीं भूला बल्कि मुसलमानों ने इस्लाम को छोड़ दिया और उन आस्थाओं से फिर गए और केवल तथाकथित इस्लाम के अनुयायी हो गए। अत: जब उन्होंने वास्तविक इस्लाम को छोड़ दिया तो ख़ुदा ने भी उनको छोड़ दिया। अभी कुछ वर्ष बीते हैं कि लोगों में प्रसिद्ध था कि क़ुस्तुन्तुनिया के बादशाह के साथ यूरोप के बादशाहों के सफीर रिकाब★ पकड़ कर चलते हैं। लेकिन आज क़ुस्तुन्तुनिया का जीवन और मौत यूरोप के लोगों के कब्ज़े में है। मुसलमानों की हालत बिगड़ गई, बंदीगृह उन से भर गए और अश्लीलताओं की उनमें गरम बाज़ारी हो गई है।

मुसलमान इस योग्य न रहे कि ख़ुदा के वादे उनसे पूरे किए जाएं

अत: इन अवस्थाओं के कारण मुसलमान ख़ुदा के इस वादे के योग्य न रहे कि उनको बुलंद किया जाए। ख़ुदा तआला ने फरमाया था कि उनके घरों में तस्बीह व तहमीद (ख़ुदा की चर्चा) सुबह-शाम होगी और अल्लाह के ज़िक्र (चर्चा) से उनकी ज़बानें गीली और सीने भरे होंगे परंतु आज कितने मुसलमान हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं और कितने हैं जो समझकर पढ़ते हैं और कितने हैं जो इस उद्देश्य से परिचित हैं जो नमाज़ में छुपा हुआ है। वे शर्तें जो ख़ुदा तआला ने बताई थीं उनमें पाई नहीं जातीं और यह ख़ुदा तआला के कलाम का और ख़ुदा के इस्लाम का और ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान कर रहे हैं। इसलिए किस प्रकार

★ अर्थात घोड़े की काठी का पायदान जिस में पाँव रख कर चढ़ते हैं- अनुवादक

ख़ुदा के वादों को प्राप्त कर सकते हैं। मुसलमान जब तक ख़ुदा का ख़ुदा के रसूल का और उसके कलाम का सम्मान नहीं करेंगे उनको कोई सम्मान नहीं दिया जाएगा।

मुसलमान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान कर रहे हैं

एक मोटा विषय है और इसी से मुसलमानों की हालत का पता लग जाता है कि वे कैसे हैं। मुसलमानों ने यह मान लिया है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो मिट्टी के नीचे दफन हैं और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को थोड़ा कष्ट हुआ तो ख़ुदा ने उनको आसमान पर चढ़ा लिया और उनके शत्रुओं को उन्हें हाथ तक नहीं लगाने दिया। मैं कहता हूँ अगर आसमान पर रखे जाने के कोई योग्य था तो वह हमारे नबी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे परन्तु ये लोग इसको पसंद नहीं करते और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह आस्था रखते हैं कि वह ज़मीन के नीचे दफन हैं और मसीह के लिए बड़े जोश भरे दिल से कहते हैं कि वह आसमान पर हैं। जब उन्होंने ईसाईयों के मुक़ाबले में हज़रत नबी करीम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस प्रकार अपमान किया तो ख़ुदा तआला ने भी उनको अपमानित कर दिया और फैसला कर दिया कि जिस तरह यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़ाते हैं इसी प्रकार हम उनको ईसा के नाम लेवाओं के मुक़ाबले में गिरा देंगे और मिट्टी में मिला देंगे। अत: ख़ुदा के स्वाभिमान ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस अपमान को बर्दाश्त न किया इसलिए उसने उन मुसलमानों को अपमानित किया और ईसाईयों को उन पर विजयी कर दिया। यह लोग उत्साह पूर्वक कहते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बिगड़ी हुई उम्मत को मसीह नासरी संभालेंगे। ख़ुदा ने कहा बहुत अच्छा हम मसीह के अनुयायियों को तुम पर हावी कर देते हैं। अत: जो कुछ उनके साथ हो रहा है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपमान का परिणाम है और जब तक यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो वाले वसल्लम से श्रेष्ठ मानते रहेंगे, अपमानित रहेंगे क्योंकि ख़ुदा ने उनको यह दण्ड दिया है। इसलिए इस दण्ड में उनके घरों को सम्मान देने की बजाय अपमानित किया जाएगा और बर्बाद किया जाएगा। उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा बनाया कि वह जीवित हैं न खाते हैं, न पीते हैं, मुर्दों को जीवित करते हैं और जानवर पैदा करते हैं। जब उनकी यह हालत हो गई तो ख़ुदा तआला उनकी कैसे सहायता कर सकता था।

क़ुरआन की सुरक्षा के वादे का पूरा करना

अब एक और प्रश्न है कि ख़ुदा ने वादा किया था कि-

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्हिज्र - 10)

देखना यह चाहिए कि ख़ुदा ने इस्लाम की सुरक्षा और क़ुरआन करीम की सुरक्षा का क्या प्रबंध किया है। इसका उत्तर यह है कि ख़ुदा ने तो प्रबंध किया है परंतु लोग उसकी ओर ध्यान नहीं देते। ख़ुदा उनको विवश करेगा कि वे उधर ध्यान दें। ख़ुदा ने एक व्यक्ति को इस्लाम की सेवा के लिए और उसको समस्त संसार के धर्मों के मुकाबले में बुलंद करने के लिए अवतरित किया है। वह व्यक्ति हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब हैं जिनको हम मानते हैं कि वह आने वाले मसीह, अल्लाह के नबी और महदी हैं। उन्होंने दावा किया है कि वह इस्लाम को दुनिया में पुनः विजयी करेंगे और उसके विरोधियों के सर उसके आगे झुका देंगे और हम इसके लक्षण देख रहे हैं।

ख़ुदा ने इस्लाम के लिए क्या किया

दुनिया उन पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाती है। विरोधी उनको दज्जाल, धोखेबाज और झूठे और क्या-क्या नाम देते हैं परंतु यह विचित्र बात है कि इस्लाम जो ख़ुदा का प्यारा धर्म है वह तो मिट रहा था और हर ओर से शत्रुओं के घेरे में था, ख़ुदा तआला ने बजाय उसकी सुरक्षा के एक और ऐसा व्यक्ति भेज दिया जो उसको मिटाए और उसको नष्ट कर दे। क्या यह ख़ुदा की इस्लाम से मोहब्बत का प्रमाण है या शत्रुता का? अगर इस्लाम ख़ुदा का प्यारा धर्म है जैसा कि वास्तव में है तो आवश्यक था कि इस मुसीबत और संकट के समय में ख़ुदा तआला उसकी सेवा और सुरक्षा के लिए कोई पवित्र व्यक्ति अवतरित करता न कि उल्टा उसको पांव तले रौंदने के लिए नऊज़ुबिल्ला एक और दज्जाल को भेजता। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम को लोग न मानें, उन्हें गालियां दें, उन्हें बुरे से बुरा ठहराएं परंतु इतना तो सोचें कि ख़ुदा ने इस्लाम के लिए यही किया कि जबकि इस्लाम डूब रहा था एक और डुबोने वाला भेज दिया। मुहब्बत का तो हक़ यह था कि ख़ुदा उसकी सुरक्षा के प्रबंध करता और उसे शत्रुओं से बचाता।

मैहर मादरी (माँ की ममता)

प्रसिद्ध किस्सा है (क़ुरआन के) व्याख्याकारों ने लिखा है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के समक्ष दो स्त्रियां झगड़ती हुई आईं उनमें से एक स्त्री के बच्चे को भेड़िए ने खा लिया वह दूसरी के बच्चे को अपना बताती थी और कहती थी कि इसका बच्चा मारा गया है। उस समय मामला बहुत टेढ़ा था। हज़रत सुलेमान ने कहा कि छुरी लाओ मैं अभी फैसला करता हूँ। बच्चे को काटकर आधा एक को दे देता हूँ और आधा दूसरी को। उस समय जिस औरत का बच्चा था तुरंत व्याकुल

होकर बोल उठी कि यह बच्चा मेरा नहीं, इसी का है इसी को दे दिया जाए परंतु दूसरी चुप रही। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह बच्चा इसी का है जो कहती है कि मेरा नहीं। (बुखारी किताबुल फ़राइज़ बाब इज़ा इद्दअतिल मरअते इब्नन) क्योंकि इसको उस से सहानुभूति पैदा हुई और दूसरी को कुछ असर न हुआ।

अत: मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बच्चे कहलाते हैं और दीन (इस्लाम धर्म) ख़ुदा का है परन्तु लोग इस पर विजयी हो रहे हैं और हर पल उस पर पत्थरों की बौछार करते रहते हैं। ऐसी अवस्था में बजाए पत्थरों से बचाने के ख़ुदा एक और पत्थर फेंकने वाले को भेज देता है। क्या यह संभव है, क्या यह बात हो सकती है? इस विचार के लोगों से तो 'हिंदा' अबू सुफियान की पत्नी ही अधिक समझदार रही जब दूसरी औरतों के साथ वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैअत करने लगी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिर्क न करने का इक़रार कराया तो वह अवश होकर बोल उठी- क्या हम अब भी शिर्क करेंगे हालांकि हमने मूर्तियों की इतनी सहायता की परंतु उनसे कुछ न हो सका और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले थे परंतु आपने ख़ुदा से इतनी सहायता पाई। अगर यह मूर्तियां सच्ची होतीं तो आप किस प्रकार सफल हो सकते थे।

अत: जब इस्लाम ख़ुदा का प्यारा है और उसकी सहायता और सुरक्षा का वादा है तो क्या कारण है कि ख़ुदा बजाए मोहब्बत का इज़हार करने के उस को हानि पहुंचा रहा है और उसकी सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं करता। (शेष.........) (अन्वारुल उलूम जिल्द 6)

★ ★ ★

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325
JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081
Guddu
Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221

क्या मांस खाना एक क्रूर कार्य है?

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.

(अंतिम भाग) (अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.)

..... आज हम असल बहस को लेते हैं। चिकित्सा की दृष्टि से यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि मास को खाने का प्रभाव मनुष्य में शक्ति, बहादुरी, जोश और सख्ती और इसी प्रकार की दूसरी विशेषताओं के रूप में प्रकट होता हैं। और सब्जियों का प्रभाव नरमी, सब्र और बर्दाश्त और इसी प्रकार की दूसरी विशेषताओं के रूप में प्रकट होती हैं। यह एक चिकित्सा का शोध है और सिर्फ एक थ्योरी के रूप में नहीं बल्कि निरीक्षण और अभ्यास की कसौटी से चमकते हुए दिन की भांति प्रकट हो चुका है। पशुओं को देख लो मांस खाने वाले और सब्जी खाने वाले पशु एक के पश्चात एक इन्हीं विशेषताओं से पूर्ण नज़र आएंगे। इस स्थान पर विस्तार की आवश्यकता नहीं और न पशुओं में इस प्रकार का शोध करना है। हर एक प्रकार के पशुओं को अपनी दृष्टि के सामने रखकर उसके आहार से उसकी विशेषताओं का निरीक्षण करना एक अत्यधिक रोमांचक दृश्य है। इस विषय से संबंधित ज्ञानियों ने इसके संबंध में बड़ी-बड़ी खोजें की हैं और अत्यधिक लाभदायक ज्ञान और अभ्यास का संग्रहण प्रस्तुत किया है। पशुओं से हटकर मनुष्य पर दृष्टि डालें तो यहां भी यह अंतर स्पष्ट रूप में दिखाई देता है अर्थात यदि मांस का खाना ग़लत और अनुचित पर बल देने वाली जातियों में बहादुरी जोश और कठोर हृदय की विशेषता नज़र आती है। तो केवल सब्जियां खाने वाली जातियों में यह विशेषता राष्ट्रीय आचरण के रूप में खत्म है और उनके स्थान पर नरमी।

(प्रकाशित- अलफ़जल इंटरनेशनल 4-10 जून 1999 ई0)

ख़ुदा के फ़ज़ल की निशानी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- जिस किसी व्यक्ति पर ख़ुदा का फज़ल होता है उसकी यह निशानी नहीं है कि वह बहुत धनी हो जाता है या सांसारिक जीवन उसका बहुत आराम से गुज़रता है, बल्कि उसकी यह निशानी है कि उसका दिल ख़ुदा तआला की ओर खींचा जाता है और वह कहने और करने के समय ख़ुदा से डरता है, सच्चा तक्वा उसको नसीब हो जाता है. ख़ुदा तआला हम सब को अपनी मर्ज़ी की राहों पर चलाए और दुनिया व आख़िरत के अज़ाब से बचाए. आमीन"

(मक्तूबात-ए-अहमद जिल्द 4 पृष्ठ 485, क़ाज़ी अब्दुल मजीद साहिब के नाम पत्र)

कर्बला

(प्रथम भाग) (अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.)

हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हु और हज़रत अमीर मुआविया के मध्य लंबा समय युद्ध और झगड़ों से मुसलमानों की एक जमाअत को विचार पैदा हुआ कि इस्लाम के मानने वालों का रक्तपान और इसके भेदभाव की पूर्ण ज़िम्मेदारी माविया रज़ि, उम्रो बिन अलआस और अली रज़ि० के सर है इसलिए यदि तीनों का किस्सा पाक (हत्या) कर दिया जाए तो मुसलमानों को इस बड़ी कठिनाई से छुटकारा मिल जाएगा यद्यपि बर्क बिन अब्दुल्लाह बिन मुल्ज़िम और उम्रो बिन बकर ने तीनों व्यक्तियों के कत्ल का बीड़ा उठाया और एक ही रात में अपने अपने शिकार पर छुपकर आक्रमण किया इब्ने मुल्ज़िम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हु को शहीद किया। उमरो बिन बकर ने उमरो बिन अलआस पर आक्रमण किया। उस दिन उनके अन्यथा दूसरा व्यक्ति नमाज़ पढ़ने के लिए निकला उनके धोखे में वह मारा गया और उमरो बिन अलआस बच गए। बर्क बिन अब्दुल्लाह ने अमीर मुआविया पर आक्रमण किया और वह घायल हुए। आक्रमण करने वाले को तुरंत बंदी बनाकर उसी समय कत्ल कर दिया गया और अमीर माविया चिकित्सा से सेहतमंद हो गए। उसी दिन से उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए मस्जिद में मकसूराह (वह छोटा सा गोल कमरा जिसमें नमाज़ के समय मुसलमान बादशाह

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

बैठा करते थे उसका आरंभ अमीर माविया ने किया) बनवाया और रात की सुरक्षा के लिए एक टुकड़ी निश्चित की।

हज़रत हसन का ख़िलाफ़त से अलग होना

हज़रत अली की मृत्यु के पश्चात अमीर मआविया के अधीन इलाका के अन्यथा बाक़ी मस्त देश की नज़रें हज़रत हसन की ओर थी इसलिए पिताजी की तद्दफीन करने के पश्चात आप रज़ि अल्लाह अन्हु जामे मस्जिद कूफ़ा पधारे मुसलमानों ने बेअत के लिए हाथ बढ़ाएं। आपने उनसे बेअत ली। अमीर मुआविया रज़ि अल्लाह अन्हु ने अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरेज़ को मुकद्दमा अल्जेश के तौर पर हज़रत हसन रज़ि अल्लाह अन्हु के मुकाबला के लिए भेजा। हज़रत हसन रज़ि अल्लाह अन्हु को जब इसकी सूचना मिली तो आप कूफ़ा से मदायन की और बढ़े। साबात पहुंचकर अपनी फ़ौज की कमज़ोरी और विमुखता देखी इसलिए उस स्थान पर ठहर कर निम्नलिखित भाषण दिया-

"मैं किसी मुसलमान के लिए दिल में घृणा नहीं रखता और तुम्हारे लिए भी वही पसंद करता हूं जो अपने लिए पसंद करता हूं और तुम्हारे सामने एक सुझाव प्रस्तुत करता हूं। आशा है कि उससे व्यर्थ में नहीं लौटाओगे। जिस एकता और यकजहती को तुम पसंद करते हो वह इस झगड़े और भेदभाव से कहीं बेहतर और उत्तम है। जिसे तुम चाहते हो मैं देख रहा हूं कि तुम में से अत्याधिक लोग जंग से स्वयं को अलग कर रहे हैं और लड़ने से कायरता दिखा रहे हैं। मैं तुम लोगों को तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मजबूर नहीं करना चाहता।"

सुलह की शर्तें

अब्दुल्लाह बिन आमिर ने बढ़कर हज़रत हसन रज़ि अल्लाह अन्हु को मदायन में घेर लिया। हज़रत हसन रज़ि अल्लाह अन्हु पहले ही अमीर मुआविया से सुलह करने के लिए तैयार थे। अपने साथियों की कायरता और कमज़ोरी को अनुभव करने के पश्चात युद्ध का विचार बिलकुल छोड़ दिया और कुछ शर्तों पर अमीर मुआविया के साथ सुलह कर ली और ये शर्तें अब्दुल्लाह बिन आमिर के द्वारा से अमीर मुआविया के पास भिजवा दी जो यह है।

1. कोई इराकी केवल द्वेष के कारण पकड़ा नहीं जाएगा।
2. बिना किसी भेदभाव के सभी को अमन दिया जाएगा।
3. हवास और फारस का समस्त कर हसन के लिए विशेष कर दिया जाएगा।
4. हुसैन को दो लाख रुपए वार्षिक अलग दिया जाएगा।
5. बनी हाशिम को नमाज़ और अतिया (दान-पुन्य) में बनी अब्दुल शम्स पर प्राथमिकता दी जाएगी।

अब्दुल्लाह बिन आमिर ने यह शर्तें अमीर मआविया के पास भिजवा दी। उन्होंने बिना किसी परिवर्तन के शर्तें स्वीकार कर लीं और आदरणीय , प्रतिष्ठित लोगों की शहादतें लिखवा कर हज़रत

हसन के पास भिजवा दी।

वर्तमान युग के हकम, अदल (आदेशक और इंसाफ करने वाले) हज़रत मसीह माऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का निर्णय। हज़रत मसीह माऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं-

हज़रत हसन ने मेरे विचार में बहुत अच्छा काम किया कि शराफ़त से अलग हो गए पहले ही हज़ारों का खून हो चुका था। उन्होंने पसंद न किया कि और खून हो इसलिए मआविया से गुज़ारा लिया क्योंकि हज़रत हसन के इस कार्य से शियों को चोट होती है इसलिए इमाम हसन इस पर पूरे रज़ि नहीं हुए। हम तो दोनों के प्रशंसक हैं। असली बात यह है कि हर व्यक्ति की अलग-अलग शक्तियां ज्ञात होती हैं। हज़रत इमाम हसन ने पसंद न किया के मुसलमानों में ग्रह युद्ध बढ़े और रक्त पान हो उन्होंने शांति पसंद की इसीको दृष्टिगोचर रखा और इमाम हुसैन ने पसंद न किया कि झूठों के हाथ पर बैअत करूं क्योंकि इससे दीन में खराबी होती है। दोनों की नियत पवित्र थी إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ यह अलग बात है कि यज़ीद के हाथ से भी इसलाम की तरक्की हुई। यह ख़ुदा तआला का फज़ल है वह चाहे तो झूठों के हाथ से भी तरक्की हो जाती है यज़ीद का बेटा तो नेक था।

हज़रत हसन की मृत्यु

सुलह के पश्चात हज़रत हसन अपने जीवन के अंतिम लम्हों तक अपने आदरणीय दादा के निकट खामोशी और सुकून का जीवन व्यतीत करते रहे 50 हिजरी में आपकी पत्नी जाअदाह, अशअस की पुत्री ने किसी कारण से ज़हर दे दिया जिससे आपकी मृत्यु हो गई। हज़रत हसन की हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट में दफन होने की बड़ी इच्छा थी इसीलिए हज़रत आयशा से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कमरा में दफन होने की आज्ञा चाहि तो उन्होंने खुशी के साथ आज्ञा दे दी। मरवान को इसकी सूचना हुई तो उसने कहा कि हसन किसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कमरा में दफ़न नहीं किए जा सकते। उन लोगों ने उस्मान को तो यहां दफ़न न होने

दिया और हसन को दफ़न करना चाहते हैं यह किसी प्रकार नहीं हो सकता। हज़रत हुसैन ने आपको जन्नतुल बक़ी में हज़रत फातमातुज़्ज़ोहरा के निकट में दफ़न कर दिया।

अमीर मुआविया का यज़ीद को वली अहद बनाने का निर्णय

हज़रत इमाम हुसैन और अमीर मुआविया दोनों के ज़ाहिरी संबंध अच्छे थे और अमीर मुआविया उनका बड़ा आदर करते थे। हज़रत हसन ने सुलाह के समय हज़रत इमाम हुसैन के लिए जो राशि शर्त की लिखवाई थी वह अमीर मुआविया उन्हें बराबर पहुंचाते रहे बल्कि उस रक़म के अन्यथा भी भेंट आदि देते रहते थे। 56 हिजरी में अमीर मुआविया ने अपनी मृत्यु के पश्चात मुसलमानों को गृह युद्ध से बचाने और उन के केंद्र को बनाए रखने के विचार से समस्त पहलुओं और कठिनाइयों को छोड़ के यज़ीद की बादशाहत का निर्णय कर लिया। हज़रत अमीर मुआविया इस बात पर विवश है क्योंकि यदि वह ऐसा न करते तो अवश्य और कई लोग इस्लामी बादशाह होने का दावा कर लेते और पुनः रक्त पान का सिलसिला आरंभ हो जाता। शाम के रहने वाले कभी भी हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाह अन्हु की बात न करते।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु बयान करते हैं कि

हम मुआविया को भी गुनहगार नहीं कह सकते क्योंकि उन्होंने उस वक्त के लिहाज़ से विवश होकर ऐसा किया। परंतु यज़ीद को भी बल्कि स्वयं मुआविया को भी ख़लीफ़ा नहीं कह सकते हां एक बादशाह कह सकते हैं।

बड़े सहाबा का यज़ीद की बादशाहत से इन्कार करना

अमीर मुआविया ने यज़ीद की हिजाज़ वालों से बैअत लेने के लिए मारवान को आदेश दिया गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर, हज़रत हुसैन और अब्दुल रहमान बिन अबि बकर ने यज़ीद की बादशाहत का विरोध किया मरवान ने यह रंग देखा तो अमीर मुआविया को इसकी सूचना दी यद्यपि वह स्वयं आए और मक्का मदीना वालों से बेअत की मांग की इब्ने उमर, इब्ने ज़ुबेर, इब्ने अब्बास, इब्ने अबी बकर और हुसैन के अन्यथा सभी ने बेअत कर ली। बेअत के पश्चात फिर उन्होंने अकेले-अकेले उन पांचों बुज़ुर्गों से नरमी और विनम्रता के साथ कहा कि तुम पांचों के अन्यथा सबने बेअत कर ली है। उन लोगों ने उत्तर दिया कि यदि मुसलमानों के विद्वान बेअत कर लेंगे तो हमें भी कोई रोक नहीं होगी। इस उत्तर के बाद अमीर मुआविया ने फिर उन लोगों से दोबारा नहीं कहा। (शेष.....)

☆ ☆ ☆

सिलसिला अहमदिया

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-6) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मामूरियत का प्रथम इल्हाम

अभी बराहीन अहमदिया के लेखन जिसके चार भाग 1880 ई० से 1884 ई० में प्रकाशित हुए पूर्ण नहीं हुए थे कि आप को ख़ुदा की ओर से मार्च 1884 ई० में वह ऐतिहासिक इल्हाम हुआ जो आपकी मामूरियत का आधार था। इस इल्हाम में आपको ख़ुदा तआला ने संबोधित होकर फरमाया-

یا احمد بارك الله فیك ما رمیت اذ رمیت ولكن الله رمی۔ الرحمن علم القران لتنذر قوما ما انذر ابائهم۔ ولتستبین سبیل المجرمین۔ قل اني امرت وانا اول المؤمنین ۔

(बराहीन अहमदिया भाग चतुर्थ रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 265 हाशिया दर हाशिया संख्या 1)

"अर्थात हे अहमद! अल्लाह ने तुझे बरकत दी है, अत: जो वार तूने दीन की सेवा में चलाया है वह तूने नहीं चलाया अपितु वास्तव में ख़ुदा ने चलाया है। ख़ुदा ने तुझे क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है ताकि तू उन लोगों को सावधान करे जिनके बाप-दादों को सावधान नहीं किया गया तथा ताकि पापियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। लोगों से कह दे कि मुझे ख़ुदा की ओर से मामूर किया गया है तथा में सबसे पहले ईमान लाता हूं।

आपका यह इल्हाम पहला इल्हाम नहीं था अपितु जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है इल्हामों का सिलसिला आपके पिताजी के जीवन में ही शुरू हो चुका था। परंतु यह वह प्रथम इल्हाम था जो मामूरियत के बारे में आप पर नाज़िल हुआ तथा जिसने आपके जीवन में नए दौर की शुरुआत कर दी। लेकिन अभी तक आपको बैअत लेने का आदेश नहीं हुआ था इसलिए इसके पश्चात आप कुछ समय तक सामान्य रूप से इस्लाम की सेवा में व्यस्त रहे और बाकायदा किसी जमाअत की स्थापना नहीं की। तथापि आपने यह किया कि अपने मामूरियत के दावे को जिसे आपने मुजद्दिदीयत का आरम्भ बताया है एक विज्ञापन के माध्यम से न केवल हिंदुस्तान के विभिन्न भागों में अपितु इस विज्ञापन का अंग्रेज़ी में अनुवाद करवा कर दूसरे देशों में भी अधिकता के साथ पहुंचा दिया तथा दुनिया भर के बादशाहों, वज़ीरों और धार्मिक लीडरों को यह विज्ञापन भिजवाया और समस्त धर्म वालों को न्योता दिया कि यदि उन्हें इस्लाम की सच्चाई अथवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई में कोई शंका हो या इल्हाम या ख़ुदा के अस्तित्व के बारे में कोई आपत्ति हो या क़ुरआन की श्रेष्ठता के बारे में कोई बात दिल में खटकती हो तो वह आपके पास आकर या पत्र के माध्यम से तसल्ली कर लें।

मुजद्दिदीयत के दावे से आपका आशय यह था कि इस्लाम में जो यह वचन दिया गया है कि प्रत्येक सदी के सर पर एक मुजदिद अर्थात मुस्लह पैदा करेगा जिसके माध्यम से ख़ुदा तआला संसार में सुधार करेगा और इस वचन के अनुसार बिती सदियों में मुजदिद आते रहे हैं अत: इस 14वीं सदी का मुजदिद मैं हूं जिसे ख़ुदा ने इस्लाम की सेवा के लिए भेजा है तथा मुझे वह ज्ञान दिया गया है और वह शक्तियां दी गई हैं जो वर्तमान युग के झगड़ों के मुकाबले के लिए आवश्यक हैं।

कुछ अन्य इल्हाम

मामूरियत के इल्हाम के पश्चात इल्हामों का सिलसिला और अधिकता के साथ शुरू हो गया और क्योंकि यह इल्हाम बराहीन अहमदिया के लेखन के समय में हुए थे इसलिए आप इन को साथ साथ पुस्तक में लिख लेते थे तथा इस तरह विरोधियों पर हुज्जत पूरी करने के लिए एक अच्छा संग्रहण तैयार हो गया। यह इल्हाम अधिकतर रूपों में भविष्य की उन्नति के बारे में है तथा उस समय में नाज़िल हुए थे जब अभी आप के दावे की बिल्कुल शुरुआत थी और अभी जमाअत अहमदिया की स्थापना भी नहीं हुई थी तथा बहुत कम लोग आपको जानते थे उनमें से तीन इल्हाम उदाहरण स्वरूप इस स्थान पर दर्ज किए जाते हैं। पहला इल्हाम यह है-:

یا تون من کل فج عمیق

अर्थात तेरे पास दूर-दूर से लोग आएंगे तथा तेरी सहायता के लिए तुझे दूर दूर से समान पहुंचेंगे यहां तक के लोगों के आने तथा संपत्ति तथा सामान के आने से क़ादियान के मार्ग घिस घिसकर गहरे हो जाएंगे।

यह इल्हाम उस समय का है जबकि क़ादियान में किसी का आना जाना नहीं था तथा क़ादियान का गांव दुनिया की नज़र से बिल्कुल ओझल तथा छुपा हुआ था परंतु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में ही लोगों ने इस इल्हाम को पूर्ण होते देख लिया तथा अभी भी इस इल्हाम की पूर्णता का सिलसिला जारी है और क्या पता इसका अंत किन किन प्राकृतिक चमत्कारों को लिए हुए होगा। दूसरा इल्हाम बराहीन अहमदिया में यह दर्ज है कि-:

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ وَجَاعِلُ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْکَ فَوْقَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْٓا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ

अर्थात समय आता है कि तेरी जान पर दुश्मनों की ओर से हमले होंगे परन्तु मैं तुझे उन समस्त हमलों से बचाऊंगा और तुझे अपने समय पर स्वाभाविक रूप से वफात दूंगा तथा तेरी मौत सम्मान की मौत होगी जिसके बाद तेरी रूह मेरी ओर उठाई जाएगी और मैं तेरे मानने वालों को क़यामत के दिन तक तेरे विरोधियों पर विजयी रखूँगा तथा वे कभी भी तेरे विरोधियों के मुकाबले पर पराजित नहीं होंगे।

(सिलसिला अहमदिया जिल्द 1, पृष्ठ 14-16)

(.....शेष)

☆ ☆ ☆

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 6) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

वंशावली

हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० की औलाद में से हैं। आप की वंशावली हासिल करके हम जन सामान्य के लिए यहाँ लिखते हैं। आज से 14 शताब्दियाँ पूर्व खिलाफते नबी स.अ.व के मालिक हुए थे आज उनके एक बेटे को ख़ुदा तआला ने एक नबी का प्रथम ख़लीफ़ा बना दिया।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि- हज़रत अब्दुल्लाह हज़रत नसीरुद्दीन- हज़रत इब्राहीम- हज़रत शैख़ मसऊद- हज़रत अब्दुल्लाह- वाइज़ असग़र- वाइज़ अकबर- शैख़ फ़तह मुहम्मद खान- शैख़ इस्हाक़- शैख़ अब्दुस सामेअ- शेख महमूद- नसीरुद्दीन- शैख़ फ़रख शाह काबली क़ुद्स- शैख़ अहमदुल मारूफ- हाफ़िज़ महमूद- शैख़ जमालुद्दीन- हज़रत शुऐब- हज़रत अहमद- शैख़ यूसुफ- शैख़ मुहम्मद- शेख शहाबुद्दीन- शैख़ सुलेमान- शैख़ बहाउद्दीन मख़्ज़ने असरार- शैख़ बदरुद्दीन- शैख़ शरीअत पनाह क़ाज़ी अब्दुर रहमान- हाफ़िज़ यार महमूद- हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़ मगफूर- हाफ़िज़ नसरुल्लाह- हाफ़िज़ अब्दुल नसीर- हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी- हाफ़िज़ अब्दुल रब्ब- हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन- हाफ़िज़ माज़ुद्दीन- हाफ़िज़ ग़ुलाम मुहम्मद- हाफ़िज़ ग़ुलाम रसूल- **हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह हाफ़िज़ नूरुद्दीन साहिब।**

(उद्धृत अख़बार बदर 28 मार्च 1912 ई०)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं-

"چہ خوش بودے گر ہر یک زامت نور دیں بودے
ہمیں بودے اگر ہر دل پور از نور یقیں بودے

ख़ुदा तआला ने अपने विशेष उपकार से यह सच्चाई से भरी हुई रूहे मुझे प्रदान की हैं सबसे पहले मैं अपने एक रूहानी भाई का वर्णन करने के लिए दिल में जोश पाता हूं जिनका नाम उनकी श्रद्धा के प्रकाश के समान नूरुद्दीन है। मैं उनकी कुछ धार्मिक सेवाओं को जो अपने हलाल माल के

LIYAKAT ALI Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop. Moblie: 9437188786
Sk. Riyazuddin 9556122405
KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

खर्च से इस्लाम की सर बुलंदी के लिए वह कर रहे हैं, हमेशा हसरत की नज़र से देखता हूं कि काश वह सेवाएं मुझसे भी अदा हो सकतीं उनके दिल में जो धर्म की सेवा के लिए जोश भरा हुआ है उसकी कल्पना से अल्लाह की क़ुदरत का नक्शा मेरी आंखों के सामने आ जाता है कि वह कैसे अपने बन्दों को अपनी ओर खींच लेता है। वह अपने समस्त माल और समस्त शक्ति और समस्त सामानों के साथ जो उनको उपलब्ध हैं हर समय अल्लाह और रसूल के आज्ञा पालन हेतु मुस्तैद खड़े हैं और मैं अनुभव से न केवल सुधारणा से यह सही ज्ञान रखता हूं कि उन्हें मेरी राह में माल क्या बल्कि जान और सम्मान तक की परवाह नहीं और अगर मैं अनुमति देता तो वह सब कुछ इस राह में कुर्बान करके अपनी रूहानी संगति के तरह शारीरिक संगति और हरदम मोहब्बत में रहने का हक अदा करते। उनके कुछ पत्रों की कुछ पंक्तियां उदाहरण स्वरूप पाठकगणों को दिखलाता हूं ताकि उन्हें ज्ञात हो कि मेरे प्यारे भाई मौलवी हकीम नूरुद्दीन भैरवी रियासत जम्मू के वैद्य ने मुहब्बत और श्रद्धा के मर्तबे में कहां तक तरक्की की है और वह पंक्तियां यह हैं:- मौलाना, मुर्शिदना, इमामना! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातहू आली जनाब! मेरी दुआ यह है कि हर वक्त हुज़ूर की सेवा में हाज़िर रहूं और समय के इमाम से वह उद्देश्य प्राप्त करूं जिसके लिए वह मुजद्दिद बनाया गया है।

यदि अनुमति हो तो मैं नौकरी से इस्तीफा दे दूं और दिन रात आपकी सेवा में पड़ा रहूं या अगर आदेश हो तो इस संबंध को छोड़कर दुनिया में फिरूं और लोगों को सच्चे दीन की ओर बुलाऊं और इसी मार्ग में जान दे दूं। मैं आपकी राह में कुर्बान हूं मेरा जो कुछ है मेरा नहीं आपका है। हज़रत पीरो मुर्शिद! मैं कमाल सच्चाई से निवेदन करता हूं कि मेरा सारा माल और दौलत अगर धार्मिक प्रचार में खर्च हो जाए तो मैं मुराद को पहुंच गया। अगर बराहीने अहमदिया के ख़रीददार किताब के प्रकाशन में विलंब होने के कारण व्याकुल हों तो मुझे अनुमति दीजिए कि मैं यह छोटी सी सेवा करूं कि उनकी दी हुई समस्त कीमत अपने पास से वापस कर दूँ। हज़रत पीरो मुर्शिद यह विनीत निवेदन करता है अगर मंजूर हो तो मेरा सौभाग्य है मेरी इच्छा है कि बराहीने अहमदिया के प्रकाशन का समस्त ख़र्चा मुझ पर डाल दिया जाए फिर जो कुछ कीमत में वसूल हो वह रुपया आपकी ज़रूरतों में ख़र्च हो। मुझे आपसे निस्बत फारूक़ी है

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
E-mail:yuba.metro@yahoo.com
{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
H&O & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○ (سورۃ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

और सब कुछ इस मार्ग में फ़िदा करने के लिए तैयार हूं, दुआ फरमाएं कि मेरी मौत सिद्दीकों की मौत हो।

आदरणीय मौलवी साहिब की सच्चाई और हिम्मत और उनकी गम ख़्वारी और जांनिसारी जैसे उनके कथन से प्रकट है उससे बढ़कर उनके व्यवहार से, उनकी श्रद्धा से भरी हुई सेवाओं से प्रकट हो रहा है और वह मोहब्बत और श्रद्धा की पूर्ण भावना से चाहते हैं कि सब कुछ यहां तक कि अपने परिवार की जिंदगी बसर करने की ज़रूरी चीजें भी इसी राह में फिदा कर दें। उनकी रूह मोहब्बत के जोश और मस्ती से उनकी ताकत से ज्यादा कदम बढ़ाने की शिक्षा दे रही है और हर दम और हर पल खिदमत में लगे हुए हैं।* लेकिन यह बहुत बेरहमी है कि ऐसे जाँनिसार पर वह सारे बोझ डाल दिए जाएं जिनको उठाना एक समूह का काम है। बेशक मौलवी साहब इस सेवा को करने के लिए समस्त जायदाद को खर्च कर देना और अयूब नबी की तरह यह कहना कि "मैं अकेला आया और अकेला जाऊंगा" कुबूल कर लेंगे लेकिन यह कर्तव्य समस्त क़ौम पर एक समान है और सब पर अनिवार्य है कि इस भयानक और फ़ित्ने से भरे हुए ज़माने में कि जो ईमान के एक नाज़ुक रिश्ते को जो ख़ुदा और उसके बंदे में होना चाहिए बड़े ज़ोर के साथ झटके देकर हिला रहा है अपने अच्छे अंजाम की चिंता करें और वह अच्छे कर्म, जिन पर मुक्ति आधारित है अपने प्यारे माल को फिदा करने और प्यारे समय को सेवा में लगाने से, प्राप्त करें और ख़ुदा तआला के उस अपरिवर्तनीय और अटल कानून से डरें जो वह अपने पवित्र क़ुरआन में फरमाता है कि - अर्थात तुम वास्तविक नेकी को जो मुक्ति तक पहुंचाती है कदापि नहीं पा सकते सिवाय इसके कि तुम ख़ुदा तआला की राह में वह माल और वह चीजें ख़र्च करो जो तुम्हारी प्यारी हैं।(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 3 पृष्ठ 35-38)

(मिर्क़ातुल यक़ीन..... पृष्ठ 29-32)

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

* हज़रत मौलवी साहिब फ़िक़ा और हदीस और तफ़्सीर का अथाह ज्ञान रखते हैं फिलॉस्फी और तबई कदीम और जदीद पर बहुत अच्छी पकड़ है। चिकित्सा की कला में एक उत्तम वैद्य हैं। हर एक कला में पारंगत हैं। धार्मिक शास्त्रार्थ में भी बड़ी महारत रखते हैं। बहुत सी अच्छी किताबों के लेखक हैं, अभी हाल ही में किताब तस्दीक बराहीन अहमदिया भी आप महोदय ने ही लिखी है जो हर एक अन्वेषक स्वभाव के आदमी की नज़र में जवाहरात से भी अधिक बेशकीमती है।

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

आबिद खान साहिब की डायरी से

हुज़ूर की जर्मनी यात्रा अगस्त 2017 ई०

(भाग – 5) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

पाकिस्तान में गुज़ारे हुए अपने जीवन के बारे में रज़्ज़ाक़ साहिब ने कहा-:

"मैं जब पाकिस्तान में था तब मुझे तथा घरवालों को कठोर अत्याचारों तथा शत्रुता का सामना करना पड़ता था। मेरे दो भांजे तथा एक भतीजे को पिछले कुछ सालों पहले हमारे गांव में शहीद कर दिया गया था। अधिकतर अहमदी भाई जो पाकिस्तान से बाहर कई वर्षों से रह रहे हैं उनको (पाकिस्तान के अहमदियों पर) हर रोज़ होने वाली कठिनाइयों का अनुमान भी नहीं है। यहां जर्मनी में आप विचार भी नहीं कर सकते कि आज़ादी के साथ नमाज़ पढ़ना तथा यह जानकर कि मैं अपने ख़लीफ़ा के पीछे इबादत कर सकता हूं कितना अच्छा अनुभव होता है।"

इससे पहले हुज़ूर अनवर से भेंट के क्षणों पर प्रकाश डालते हुए रज़्ज़ाक़ साहब ने कहा-:

मैं अपने आंसूओं पर काबू नहीं पा सकता क्योंकि आज मुझे जीवन में पहली बार अपने प्यारे इमाम से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है तथा मैं इसको उन अत्याचारों के पुरस्कार के रुप में मानता हूं जो मेरे खानदान वालों ने देखे।

इसी सुबह हुज़ूर अनवर ने एक जवान अहमदी खानदान श्री जुनैद बुखारी (28) तथा इनकी पत्नी श्रीमती अनम मकसूद साहिबा से भी भेंट की। यह दोनों भी मूल रूप से पाकिस्तान से थे।

जुनैद ने मुझे बताया कि उन्होंने 2004 ई० में अपनी छोटी उम्र में अपनी माता जी के साथ अहमदियत

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal flipkart

amazon.com Paytm

Ph: 7702857646

rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal

9550147334

deco.leathers@gmail.com

DECO DL LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also

Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road

Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

स्वीकार कर ली थी। जबकि खानदान के बाकी लोग ग़ैर अहमदी ही रहे।

जुनैद साहिब ने कहा-:

"मैंने 15 साल की आयु में अहमदियत स्वीकार की इस से पहले मैंने सुन्नी मुसलमान की तरह परवरिश पाई थी। मैं कुछ अहमदी लड़कों के साथ क्रिकेट खेला करता था तथा वह मुझे अपने अक़ाएद के बारे में बताते थे जिनका मुझ पर गहरा प्रभाव हुआ था। अहमदियत और उस तथाकथित इस्लाम में, जिसकी मैं इससे पहले पैरवी कर रहा था, ज़मीन-आसमान का अंतर है। शायद सबसे बड़ा अंतर यही है कि अहमदी उन्हीं बातों का पालन करते हैं जिनकी वे तबलीग़ करते हैं।"

जुनैद साहब ने और कहा:-

"अहमदियत को स्वीकार करने के बाद मेरे संबंधी मुझसे तथा मेरी माँ से बहुत क्रोधित हुए तथा उनमें से अधिकतर ने हमसे नाता तोड़ लिया। कुछ समय बाद उन्होंने हम से दोबारा संपर्क किया परंतु प्रेम का पहले जैसा संबंध न रहा। तथा इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि मुझे सच्चे इस्लाम की समझ प्राप्त हो चुकी है तथा इससे मेरे जीवन को एक दिशा की ओर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है तथा मुझे वास्तविक रूप में ईमान का इरफान प्राप्त हुआ है।"

एक और व्यक्ति नवीद अहमद शहज़ाद (उम्र 30) वर्ष थे जो हुज़ूर से मिले उन्होंने कहा:-

"जब मैं हुज़ूर से मिला मैंने महसूस किया कि मेरा पूर्ण शरीर कांप रहा है और जब मैंने हुज़ूर के हाथों का स्पर्श किया तो मैंने महसूस किया कि मुझे जैसे नए जीवन की प्राप्ति हो गई हो। यह 1 मिनट की हुज़ूर से भेंट थी परंतु इसकी यादें पूरे जीवन भर रहेंगी। हुज़ूर का स्नेह तथा प्रेम अतुल्य है जब मैं पाकिस्तान में था मैं हुज़ूर को दुआ के लिए पत्र लिखता था।

क्योंकि हमारे गांव में अहमदियों पर बहुत अत्याचार किया जाता था अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद भी हुज़ूर पत्र का जवाब देते और अपने हाथों से स्वयं हस्ताक्षर करते और हमें पहले से अधिक इस्तग्फार करने के परामर्श देते यह सब हुज़ूर की दुआओं का परिणाम है कि आज मैं यहां जर्मनी में शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा हूं।"

एक और परिवार जो पहली बार हुज़ूर अनवर से मिला जो मुकर्रम आसिफ अहमद साहब 40 और उनकी पत्नी मुकर्रमा मुबश्शिरा नसीर साहिबा थे।

इन दोनों ने मुझे बताया कि पाकिस्तान में उन्होंने बहुत अत्याचार सहन किए हैं तथा 2 वर्ष पहले उनके एक अहमदी संबंधी को शहीद भी किया गया था तथा अधिकतर ग़ैर अहमदी उनके मरे हुए रिश्तेदारों की क़ब्रों को खोद कर उनका अपमान किया करते थे।

☆ ☆ ☆

फ़र्मूदात हज़रत मुस्लेह मौऊदरज़ि०

अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

वर्तमान संसार से पूर्व लोगों की जज़ा-सज़ा (प्रतिफल)

प्रश्न:- क्या प्रतिफल और क़यामत उन लोगों के लिए भी स्थापित किए गए जो गुज़रे ज़मानों से संबंध रखते थे और उनकी रूहें अब अपने कर्मों के अनुसार नर्क अथवा स्वर्ग में होंगी या यह कि जब एक नया संसार पैदा किया जाता है तो गुज़रे जहानों की रूहें नष्ट हो जाती हैं क्योंकि ख़ुदा रूहों को पैदा करता है और उनको बर्बाद भी कर सकता है समस्त रूहें उसकी क़ुदरत या इच्छा के अधीन हैं?

उत्तर: यह बिल्कुल सही है कि वे लोग जो हमारे समय से पहले संसार से गुज़र चुके हैं उनके लिए आवश्यक है कि वह ख़ुदा तआला की इनाम और उसका प्रतिफल प्राप्त कर रहे हों या वे नष्ट कर दिए गए हों और उनके स्थान पर एक नया संसार पैदा हो गया हो, परंतु चूंकि अल्लाह तआला के कलाम से हमें यह ज्ञात नहीं होता कि हम से पहले जो प्रजातियां गुज़र चुकी हैं उनकी रूहें किस सीमा तक पूर्णता को पहुंच चुकी थीं और न हमें यह ज्ञात होता है कि उनका दंड शाश्वत था अथवा सीमित, इसलिए हम निश्चित रूप से यह बात नहीं कह सकते कि क्या उस स्रष्टि की रूहें शाश्वत इनाम प्राप्त कर रही हैं अथवा दंड प्राप्त कर रही हैं अथवा इस कारण से कि उनकी रूहें मौजूदा इंसानी रूहों से अपूर्ण थीं, वे नष्ट कर दी गईं. इस प्रश्न का उत्तर क्योंकि हमारी बेहतरी अथवा हमारी रूहानी प्रगति के साथ कोई संबंध नहीं रखता इसलिए पवित्र क़ुरआन इस विषय में खामोश है। वह ख़ुदा तआला की सिफ़त पर रोशनी डालने के लिए केवल इतना बताता है कि हमसे पूर्व भी स्रष्टि हुआ करती थी और यह कि ख़ुदा तआला की सिफ़ात (विशेषताएं) नष्ट नहीं होतीं। यह बिल्कुल सही है कि रूहें ख़ुदा तआला की इच्छा के अधीन हैं और वह नष्ट कर सकता है परंतु आवश्यक नहीं कि वह नष्ट कर भी दे. यदि वह चाहे और क़ायम रखे तो कोई उसके मार्ग में रोक नहीं बन सकता। (अल-फज़ल 2 जुलाई 1929 भाग 17 पृष्ठ 6)

स्वर्ग-नर्क का स्थान

प्रश्न: स्वर्ग और नर्क कहां हैं? उत्तर: स्वर्ग और नर्क का स्थान हम कोई प्रस्तावित नहीं कर सकते वास्तव में इन दोनों चीज़ों के लिए स्थान स्थापित करना भी गलत है क्योंकि

यह दोनों चीज़ें भौतिक स्थानों से ऊपर हैं। पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि मोमिनों का बदला समस्त आसमानों और ज़मीन के बराबर होगा और रसूल ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं यह बदला छोटे मोमिन का बदला है यदि कोई भौतिक स्थान जो किसी सहारे से विशेष होना जन्नत के लिए ठहरा दिया जाता तो एक छोटे मोमिन का बदला आसमान और ज़मीन के बराबर किस प्रकार हो सकता था।

जन्नत की हूरें

प्रश्न: पुरुषों को जन्नत में हूरें मिलेंगी। स्त्रियों को क्या मिलेगा। क्या उन्हें भी हूरें मिलेंगी?

उत्तर: गलती इससे लगी है कि यह समस्त इस्तिआरे (रूपक) हैं। अगले संसार के जीवन के लिए भी और इस संसार के लिए भी। और यह भी गलती है कि समझ आयतों को अगले जीवन पर ही लगा लिया गया है। बल्कि इस संसार में मुसलमानों को सफलताओं की खुशख़बरी है कि न केवल पुरुष नेक होंगे बल्कि औरतें भी। क़ुरान ए शरीफ़ में हूर का शब्द है जिसका अर्थ काली आंख वाली के हैं। अत: ईरान पहले मुसलमान हुआ और ईरानियों ने इस्लाम के शौक में अपनी बेटियां मुसलमान सिपाहियों से ब्याही हैं। अत: स्वयं हज़रत हसन और हुसैन के घर में भी ईरानी पत्नियां थीं।

तो जहां तक क़ुरआन की भविष्यवाणी का प्रश्न है मुसलमान क़ौम यदि क़ौम होने के कारण मुसलमान होगी तो उनकी पत्नियां भी नेक होंगी और पत्नियों के पति भी नेक होंगे। किसी दूसरी स्त्री का प्रश्न ही नहीं, न किसी दूसरे पुरुष का प्रश्न है। पुरुष और स्त्री या दोनों इनाम में बराबर हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लामी उसूल की फिलास्फी में इस पर विस्तार से चर्चा की है। (फ़र्मूदात मुस्लेह मौऊद, पृष्ठ - 7-8)

सामान्य ज्ञान

प्रश्न 1- कौन राजस्थान का राज्य पशु कौन है?

उत्तर: - ऊंट

प्रश्न 2. किस भारतीय कवि को कविगुरु के नाम से भी जाना जाता है?

उत्तर: रविन्दनाथ टैगोर

प्रश्न 3. किस बैंक का नियन्त्रित उपक्रम में राष्ट्रीय आवास बैंक है?

उत्तर: - भारतीय रिजर्व बैंक

प्रश्न 4. पहले अफ्रीकी संयुक्त राष्ट्र संघ के महा-सचिव कौन थे?

उत्तर: - कोफ़ी अन्नान

प्रश्न 5. बनी–ठनी पेन्टिंग शैली भारत के किस शहर से सम्बंधित है?

उत्तर: - किशनगढ़

प्रश्न 6. किस शासक ने भू-माप के लिए सिकंदरी-गज शुरू किया था?

उत्तर: - सिकंदर लौदी

प्रश्न 7. भारत सरकार का कौन सा पदाधिकारी है जो संसद के किसी भी सदन की कार्यवाही में भाग लेने का अधिकार रखता है?

उत्तर: - महान्यायवादी

प्रश्न 8. भारत के किस शहर में नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ स्पोर्ट्स स्थित है?

उत्तर: - पटियाला

प्रश्न 9. किस खेल में "विल्स ट्राफी" दी जाती है?

उत्तर: - क्रिकेट

प्रश्न 10. कितने वर्ष के अन्तराल में विश्व शतरंज चैंपियनशिप होती है?

उत्तर:- 2 वर्ष

प्रश्न 11. भारत के राष्ट्रीय ध्वज कि लम्बाई चौड़ाई का अनुपात क्या है?

उत्तर- 3:2

प्रश्न 12. मध्य रेलवे का मुख्यालय कहां स्थित है?

उत्तर: मुंबई (वी.टी.)

प्रश्न 13. भारतीय रेलवे के मानचित्र पर जम्मू शहर कब शामिल किया गया था?

उत्तर: 1965 ई०

☆ ☆ ☆